Prateek Thakur

~~NT~~ – Hindi · – Test – 3

NT MAINS

प्राप्तांक के विवरण (परीक्षक द्वारा भरा जाए) / Marks Details (To be filled by the Examiner(s))

प्रश्न सं. Q. No.	अंक Marks		प्रश्न सं. Q. No.	अंक Marks	
1			11		
2			12		
3			13		
4			14		
5			15		
6			16		
7					
8					
9					
10					
उप-योग (A) Sub-Total (A)			उप-योग (B) Sub-Total (B)		
सकल योग (A+B) / GRAND TOTAL (A+B)					

44/50

1

प्रश्न 1: दिए गए भाग का हिंदी में अनुवाद कीजिये: **(10)**

Frankness may be among the most overrated of virtues! And here's why. Because unrestricted and unfiltered frankness is a recipe for breaking relationships, even the closest ones. Such frankness is understandable, acceptable and even 'cute' only in children under the age of five. Thinking before one speaks and using restraint are hallmarks of growing maturity and preparation for life. Learning to put a filter between thought and spoken word (and, even more importantly, written word) is an important life skill. Think is a popular acronym for True, Helpful, Inspiring, Necessary and Kind. This would do wonderfully well as a filter in our minds.

Ans:-

'स्पष्टवादिता' को आवश्यकता से अधिक मंडित गुणों में से एक माना जा सकता है। यह इसलिए क्योंकि निर्बाध तथा अविवेकपूर्ण स्पष्टवादिता घनिष्टतम रिश्तों को तोड़ने का कारक बन ~~सकता~~ है। इतनी स्पष्टवादिता न केवल तभी समझ में आती है, मान्य होती है, अपितु प्यारी भी लगती है, यदि वह पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों द्वारा की जाए। सोच-समझ कर बोलना तथा बोलते समय विवेकपूर्ण छँटनी करना परिपक्वता तथा जीवन के प्रति तैयारी के लक्षण हैं। विचारों तथा अभिव्यक्ति में विवेकपूर्ण छँटनी करना (विशेष रूप से लिखित अभिव्यक्ति में) जीवन की एक महत्त्वपूर्ण कला है।

थिंक (THINK अर्थात सोचना) शब्द; ट्रू (True अर्थात सत्य), हेल्पफुल (Helpful अर्थात मददगार), ~~Inspiring~~ इंस्पायरिंग (Inspiring अर्थात प्रेरणादायक)

why ?

'नेसेसरी' (Necessary अर्थात् आवश्यक) तथा ~~काइंड~~ कॉइंड (Kind अर्थात् उदार) शब्दों के लिए एक विख्यात संयुक्त शब्द है। यह हमारे मन में एक विवेकपूर्ण ~~चलनी~~ के रूप में काफी मददगार सिद्ध होगा।

सोच-समझकर सही निर्णय लेने के लिए

(6)

प्रश्न 2: दिए गए गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये:

हम कभी-कभी सोचते हैं कि कोई काम न हो तो बहुत अच्छा होगा। हम अमीर लोगों से कैसे ई
हैं, जिन्हें अपने जीवन यापन के लिए काम नहीं करना पड़ता है, लेकिन वे वही कर सकते हैं ज
भर करते हैं। फिर भी जब हमें ऐसा लगता है तो हम गलती करते हैं। कभी-कभी अमीर लोग उ
नहीं होते जितना हम सोचते हैं, क्योंकि वे कुछ न करने के कारण थक जाते हैं। हम में से अधि
खुश होते हैं जब हमारे पास अपने जीवन यापन के लिए नियमित काम होता है, खासकर अगर
है जो हम करना पसंद करते हैं। हमारे लिए सबसे पहला काम हमें खुशी देना है। वह सड़को
भिखारी की तरह है जो इसे कमाने के लिए कड़ी मेहनत करने वाले दूसरों के बंदर को ले जात
लोग स्वतंत्र रूप से नहीं रहते हैं और उन्हें शर्म आनी चाहिए। लेकिन ईमानदार कार्यकर्ता जो
परिश्रम से अपना जीवन यापन करता है, वह अपना सिर पकड़ कर खुद का सम्मान कर सकत
में नियमित कार्य से चरित्र का निर्माण होता है। यह हमें काम में समय की पाबंदी, सावधानी, संपू
विश्वास जैसी अच्छी आदतें सिखाता है। यह आदमी है जो काम करता है, आलसी नहीं, जो एक
रूप में सबसे अच्छा चरित्र विकसित करता है।

प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश में लेखक द्वारा कार्य के महत्त्व तथा उससे होने वाले लाभ पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या :-

लेखक कहते हैं कि साधारणतय: मनुष्यों को बिना काम के रहना तथा आलस्यपूर्ण जीवन अतीत कैसा सुखमय लगता है। वह उन अमीर व्यक्तियों से ईर्ष्या करते हैं जो बिना कार्य के के भी जीवन निर्वाह करते हैं। परंतु वास्तव में बिना कार्य के रहना एक गुण नहीं परंतु अवगुण है। बिना कार्य के मनुष्य में कई तरह के विकार उत्पन्न हो जाते हैं।

बिना नियमित कार्य के मनुष्य अपनी ऊर्जा को सही दिशा में परिवर्तित न कर पाने के कारण नकारात्मक विचारों से ग्रस्त होकर दूसरी अनुभव करता है। जीवन में खुश रहने का सबसे अच्छा माध्यम काम करना ही है। अगर जीवन में जीवन-यापन के निर्वहन के लिए कोई अपने पसंद का कार्य चुन सके तो उससे श्रेष्ठ कोई बात नहीं हो सकती।

कार्य ऐसा हो जो हमें खुशी दे तथा आत्मसम्मान में वृद्धि करे। कवि ने एक भिखारी के कार्य की भर्त्सना की है तथा कड़ी मेहनत को ही श्रेष्ठ माना है।

कार्य करने से न केवल मनुष्य धन उपार्जित करता है अपितु यह मनुष्य के चरित्र निर्माण में भी अत्यधिक सहायक होता है। कर्म में संलग्न रहना मनुष्य को अनुशासित, समय की महत्ता समझने वाला, विश्वासयुक्त, स्वाभिमान जैसे गुणों से भर देता है। यह न केवल मनुष्य को आलस्य से बचाता है अपितु चरित्र को भी निखारता है।

विशेष –
~~लेख~~ . लेखक ने कर्म के महत्व पर प्रकाश डाला है।

- तद्भव शब्दों का प्रयोग तथा है।
- भाषा में सरलता, सुबोधता तथा सुंदरता है।
- वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।
- भाषा प्रभावात्मक है तथा गद्यांश विचार-प्रधान है।

9

शब्दार्थ :- संपूर्णता - पूरा होना।
निर्माण - बनाना।

प्रश्न 3: दिए गए पद्यांश/काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये: **(10)**

मानता था मैं पूरित स्नेह है।
क्योंकि अनगिन शिखाएँ थीं, धूम था नैवेद्य-द्रव्यों से सुवासित,
और ध्वनि? कितनी न जाने घंटियाँ
टुनटुनाती थीं, न जाने शंख कितने घोखते थे नाम :
नाम वह, आतंक जिस का
चीरता थर्रा रहा था गन्ध-मूर्च्छित-से घने वातावरण को।
उपादानों की न थी कोई कमी।
मैं रहा समझे कि मैं हूँ मुग्ध। जाना तभी सहसा
लुब्ध हूँ केवल-कि ले कर जिसे अपने तईं मैं हूँ धन्य-
जीवन शून्य की है आरती!
बहा दूँ सब दीप! बुझने दो
अगर है स्नेह कम। सारी शिखाएँ लुटें। ग्रस ले धुआँ अपने-आप को!
मुखर झन्नाते रहें या मूक हों सब शब्द-पोपले वाचाल ये थोथे निहोरे।
जगा हूँ मैं : क्यों करूँ आराधना उस देवता की
जो कि मुझ को सिद्धि तो क्या दे सकेगा-
जो कि मैं ही स्वयं हूँ!

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश में कवि द्वारा जीवन की वास्तविकता तथा तत्त्वज्ञान होने पर मन में उत्पन्न नीरसता के भावों का अन्योक्ति अलंकार के माध्यम से सुंदर वर्णन किया है।

व्याख्या :- कवि ने अपनी तूलिका के माध्यम से लिखा है कि कवि को जीवन के अच्छे समय में जगत स्नेह से परिपूर्ण लगा। यहाँ कवि जीवन की

Website: www.civilstaphimachal.com

किसी देव मंदिर से करते हैं। माया की तुलना किसी देव मंदिर में नैवेद्य, वह कहते हैं कि जीवन रूपी मंदिर में नैवेद्य, धूप, आरती इत्यादि प्रसाधन थे। वहाँ घंटियाँ, शंखों तथा वाद्य यंत्रों की मधुर ध्वनियाँ थीं। मंदिर में गूँजने शंख की ध्वनि से समूचा वातावरण गूँज रहा था। वहाँ संसाधनों की कोई कमी नहीं थी। इसी प्रकार जीवन के शुभ समय में यह संसार हर प्रकार के सुखों, रागों, प्रसादों से भरा पड़ा था तथा कवि को जीवन अनश्वर स्नेह ही भ्रांति प्रतीत हुआ।

परंतु कवि कहता है कि जिसे ही जीवन के दुःखों से उसका सरोकार हुआ तो उसे एहसास हुआ कि वो मात्र मोह ग्रस्त था। जिस जीवन को वह पूर्णता से व्याप्त मानता था वह शून्य मात्र था। जीवन की व्यर्थता को समझने पर कवि जीवन रूपी मंदिर से सभी धूप, आरतियों की अग्नि, धुआँ, हटाने को कहता है। वह मानता है कि अब मंदिर रूपी जीवन में गूंज रहे शंख, वाद्यों आदि के मधुर स्वर उसके लिए कोई मायना नहीं रखते।

वह विरक्ति के भावों से भरकर कहता है कि अब जब वह मोह से बाहर आ गया है तो स्नेह तथा सुःख रूपी देव की आराधना करना व्यर्थ है। उसे मर्म हो गया है कि जीवन में व्याप्त सुःख तथा माया क्षणभंगुर हैं तथा उनकी आराधना से कोई सिद्धि नहीं मिल सकती। केवल मात्र आत्मा के मर्म को समझना ही सार्थक है क्योंकि ब्रह्म अपने अंदर ही निवास करता है।

कवि द्वारा जीवन तथा देवता के मंदिर की सुंदर तुलना प्रस्तुत की गई है। जीवन की वास्तविकता का पता चलने पर सारे प्रसाधन व्यर्थ लगते हैं।

एक मर्मज्ञ व्यक्ति स्वतः ही नीरस हो जाता है। परंतु यह मर्म समझना अत्यंत कठिन है क्योंकि जीवन की माया मनुष्य को सत्यबोध नहीं होने देती। कबीर दास जी ने भी कहा है,

माया मरी न मन मरा, मर मर गये शरीर,
आशा तृष्णा न मरी, कह गए संत कबीर।

विशेष :- तत्सम शब्दों की प्रधानता है।
- अन्योक्ति अलंकार का प्रयोग है।
- भाषा में प्रवाहात्मकता की कमी है।
- शांत रस की झलक मिलती है।

(10)

Q. 4

प्रश्न 4: निम्नलिखित मुहावरे अथवा लोकोक्तियों का सही अर्थ लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिये:

1. चल बसना
2. रंगा-सियार
3. हाथ चूमना
4. दाँत काटी रोटी होना
5. अपनी जाँघ उघाड़ना

1. चल बसना - (मर जाना, मृत्यु हो जाना)
 - राम कम उम्र में ही चल बसा और अपने परिवार को विपत्तियों में छोड़ गया।

2. रंगा-सियार - (धूर्त व्यक्ति)
 - सब लोग जानते हैं कि रमेश रंगा सियार है इसलिए तुम उसकी बातों पर भरोसा मत करना।

write clear करना

3. हाथ चूमना - (पूर्ण सम्मान करना / बहुत प्रेम करना)
 - पुत्र की परिक्षा में सफलता की खबर सुनकर पिता ने उसके हाथ चूम लिए।

(4) दाँत कटी रोटी होना – ~~घनिष्ठ~~ (गहरी मित्रता होना)

- राम और श्याम दाँत कटी रोटी हैं तथा एक दूसरे के खिलाफ कुछ नहीं सुन सकते।

10

(5) अपनी जाँघ उघाड़ना – (अपना अहित करना)

- समझाने पर भी श्याम नहीं समझता तथा अपनी जाँघ उघाड़ने को सदा आतुर रहता है।

Website: www.civilstap...

Q.5

प्रश्न 5: दिए गए शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग अलग करके लिखिए:

खुशबू, निर्वाह, समतल, संगठन, निश्चेष्ट, उल्लेख, स्वागत, दुश्चिंत, पर्याप्त, उपलब्धता

शब्द		उपसर्ग
1. खुशबू	–	खुश ✓
2 निर्वाह	–	नि: ✗ निर्
3 समतल	–	सम ✓
4. संगठन	–	सम् ✓
5 निश्चेष्ट	–	नि: ✗ निस्
6. उल्लेख	–	उत् ✓
7. स्वागत	–	सु ✓
8 दुश्चिंत	–	दु: ✗ दुस्

PTO

9 पर्याप्त – परि ✓

10. उपलब्धता – उप ✓ ④

Q. 6

प्रश्न 6: दिए गए शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए।

अति, जेय, अर्जन, प्रसारण, आदर्श, आतुर, उग्र, ऋण, उच्च, उद्धत

शब्द - विपरीत

1. अति - अल्प
2. जेय - अजेय
3. अर्जन - व्यय
4. प्रसारण - संकुचन
5. आदर्श - अनादर्श
6. आतुर - उदासीन
7. उग्र - सौम्य
8. ऋण - उऋण
9. उच्च - निम्न
10. उद्धत - विनीत

5